शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (403-413) April - June 2019

पाठ्यपुस्तक भारतीय कला का परिचय – दिग्दर्शन विश्लेशण

राजेश कुमार निमेश
सह–आचार्य, सी आई ई टी, एन सी ई आर टी, दिल्ली
Email: rajesh.nimesh@gmail.com

सारांश

यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, और निजी विद्यालयों के शिक्षकों की ललित कला की पाठ्यपुस्तक भारतीयकला का परिचय–दिग्दर्शन विश्लेषण हेतु पाठ्यपुस्तकों की परिचय–दिग्दर्शन पर अध्यापकों की प्रतिकियाएं प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त की गई जिसके आधार पर पुस्तकों का विश्लेषण किया गया और अध्ययन में पाया गया कि पाठ्यपुस्तक से संबंधित कुछ मानक बिदुओं जैसे शीर्शक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है, गतिविधियों के निर्देष सामग्री से अलग बोल्ड या बड़े अक्षर के आकार में है, दो रेखाओं के मध्य में पर्याप्त दूरी, पाठ्यपुस्तक में लिखित सामग्री अतिव्यापी (Overlapping) होते हुए भी पठनीय है, दृश्य लिखित जानकारी को उच्चस्तर तक उर्जा के रुप में संवाहक का कार्य करता है, दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है, विशयवस्तु की प्रकृति को उभारने के लिए सापेक्ष प्रकाश और छाया का सही उपयोग, पृष्ठ का उपयोग पूर्ण रुप से किया गया है, जिससे शब्दों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके, पुस्तक में नकारात्मक स्थान सामग्री पर उचित ध्यान केन्द्रित और अनिवार्य करता है, प्रत्येक पृष्ठ में अनुपात, विशय वाक्यों और दृष्यों को समायोजित करने का प्रयास किया गया है, विभिन्न रंगों के शीर्षकों का उपयोंग करके गतिविधियों के बीच की सीमाओं को दर्शाया गया, आवरण डिज़ाईन आकर्शक और सौन्दर्ययत्मक ढंग तरह से तैयार किया गया है, शब्द और चित्रों को विशिष्ट स्थान दिया गया ह, पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों के रंगों की संरचना में सामन्जस्यता है, उच्च गुणवत्ता वाले मुद्रण और जिल्द के लिए उच्च स्तर के उपकरण और तकनीक का प्रयोग किया गया है, पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन, संयोजन और आवरण छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करता है, पर आंशिक रुप से अनिश्चित और असहमत है, अर्थात पाठ्यपुस्तक शतप्रतिशत अध्यापकों की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरती।

मुख्य शब्दः ललितकला, पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक, पाठ्यसामग्री , मूल्यांकन, सृजनात्मक, विजुअलाइजेशन

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तकें छात्रों और अध्यापकों का शिक्षण अधिगम के लिए एक महत्वपूर्ण आधार होती हैं। जिनका निरन्तर उन्नयन होने से शिक्षा, समाज और पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों का एक दर्पण की तरह दर्शाती है। इसलिए पाठ्यपुस्तकों को प्रामाणिक और रोमांचक होना चाहिए, यदि पाठ्यपुस्तकों में इन मुद्दों को शामिल नहीं किया गया तब छात्र ही नहीं बल्कि शिक्षकों में भी पुस्तकों पर कार्य करने की उर्जा और क्षमता में कमी होगी। प्रामाणिकता के

साथ–साथ रोमांचकता लाने के लिए जाहिर है, छवियाँ पुस्तकों की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती हैं। विजुअलाइजेशन का उद्देश्य दर्शकों को सूचना संशोधित करने का एक दृश्य साधन प्रदान करना है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रत्योक्षकरण प्रभावी तभी होगा जब यह दर्शक के ज्ञान के आधार पर आकर्षित होगा। यदि दर्शक चित्रमय वास्तविकता को समझने के लिए अपने ज्ञान का उपयोग नहीं करता, तब उनके बीच के संबंध प्रत्योक्षकरण अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिए पाठ्यपुस्तक सामग्री को विजुअलाइजेशन करना अति आवश्यक होता है, और इसके प्रभाव को ऑकने के लिए समय–समय पर पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन पाठ्यपठन सामग्री या उसका रेखांकन प्रस्तुतिकरण दोनों पहलुओं के आधार पर किया जाना चाहिए, जो पुस्तक की गुणवत्ता के लिए एक अति आवश्यक प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार, हर स्तर पर विशय के रूप में कला को जगह दिए जाने की सिफारिश की गई है जिसमें गायन, नृत्य, दृश्य कलाएँ और नाटक चारों पहलू शामिल हैं, साथ ही परस्पर–क्रियात्मक पद्धतियों के साथ–साथ प्रशिक्षण पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार शिक्षकों को प्रभाववादी आकलन से आगे बढ़ने में मदद करता है, और यह उन्हें पाठ्यपुस्तक सामग्री की समग्र प्रकृति में उपयोगी, सटीक, व्यवस्थित और प्रासंगिक अंतर्दृश्टि प्रदान करने में मदद करता है। इस अध्ययन में कक्षा ग्यारहवीं की पाठ्यपुस्तक भारतीय कला का परिचय, भाग–1 जो कि ललितकला पर आधारित है, (An Introduction to India Part-1, Textbook in Fine Arts) जो राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित की गई है, को मूल्यांकन के लिए चुना गया। जिसमें 8 अध्याय हैं, जैसेः प्रागैतिहासिक रॉक पेंटिंग, सिंधु घाटी की कलाएँ, मौर्य काल की कलाएँ, भारतीय कला में मौर्यकालीन रुझान और आर्किटेक्चर, बाद में भित्ति परंपराएँ, मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला, भारतीय कांस्य मूर्तिकला, और इंडो–इस्लामिक आर्किटेक्चर के कुछ पहलू। इसलिए इस अध्ययन के मूल्यांकन में विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को कथन के रुप में उपयोग किया गया है, जो कि कला शिक्षण सामग्री के उद्देश्य को सौंदर्यात्मक और वैयक्तिक चेतना को प्रोत्साहित करने में विविध रूपों में व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ावा देगी है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अनुसंधान के अंर्तगत उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ललित कला शिक्षण में एनसीईआरटी/सीबीएसई/निजी प्रकाशकों द्वारा उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर ललित कला के लिए प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों से संबंधित अध्ययन।

अध्ययन की सीमा

यह शोध शीर्षक ''उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर ललित कला शिक्षण में पाठ्यपुस्तक भारतीयकला का परिचय–दिग्दर्शन विश्लेषण पर आधारित है। यह शोध अध्ययन में केवल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली क्षेत्र में स्थित विद्यालयों पर ही सीमित है। अध्ययन में दिल्ली सरकार के विद्यालयों, दिल्ली सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालयों, और दिल्ली निजी विद्यालयों के अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य प्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन के अंर्तगत पाठ्यपुस्तक विश्लेषण मापनी के लिए यादृच्छिकी न्यादर्शन तकनीक द्वारा (03) सरकारी विद्यालयों, (03) सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों, और (03) निजी विद्यालयों के अध्यापकों को पाठ्यपुस्तक विश्लेषण मापनी विरित की गई। प्रत्येक प्रत्यर्थी को (01) पाठ्यपुस्तक विषयवस्तु विश्लेषण मापनी वितरित की गई। जिसमें सभी 09 अध्यापकों से पूर्ण 9 मापनियाँ प्राप्त हुई, जो कि वितरित मापनियों का सत् प्रतिशत रहा।

अध्ययन के अंर्तगत क्षेत्र

कथनः 1 **सजावटी अक्षरों का उपयोग पुस्तक को आकर्षक और विशिष्ट बनाने के लिए किया गया है।**

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत, 1(11.11%)अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः सजावटी अक्षरों का उपयोग पुस्तक को आकर्षक और विशिष्ट बनाने के लिए किया गया है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए ।

कथनः 2 **उपयोग किए गए अक्षर पठनीय है जैसे टाईम और क्रुतिदेव।**

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 4(44.44%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 55.56%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः उपयोग किए गए अक्षर पठनीय है जैसे टाईम और क्रुतिदेव के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाए गए, वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत, पाए गए।

कथनः 3 शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है अनुसार शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमतपाया गया। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए।

कथनः 4 गतिविधियों के निर्देश सामग्री से अलग बोल्ड या बड़े अक्षर के आकार में

दर्षाए गए हैं।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत, 4(44.45%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः गतिविधियों के निर्देष सामग्री से अलग बोल्ड या बड़े अक्षर के आकार में दर्शाए गए हैं, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के मतसहमतपाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए।

कथनः 5 दो रेखाओं के मध्य में पर्याप्त दूरी रखी गयी है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दो रेखाओं के मध्य में पर्याप्त दूरी रखी गयी है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए।

कथनः 6 पाठ्यपुस्तक के आकार के अनुसार विषयवस्तु की रेखा की लंबाई उचित है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 5(55.56%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक के आकार के अनुसार विषयवस्तु की रेखा की लंबाई उचित है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए।

कथनः 7 पाठ और पृष्ठभूमि के रंगो में उचित चमक है, और आसानी से पठनीय है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत, 4(44.44%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ और पृष्ठभूमि के रंगो में उचित चमक है, और आसानी से पठनीय है,के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए।

कथनः 8 पाठ्यपुस्तक में लिखित सामग्री अतिव्यापी (आवरलेपिंग) होते हुए भी पठनीय है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक में लिखित सामग्री अतिव्यापी (आवरलेपिंग) होते हुए भी पठनीय है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए।

कथनः 9 रेखाचित्रों से अधिक अन्य छायाचित्रों को प्राथमिकता दी गई ।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः रेखाचित्रों से अधिक अन्य छायाचित्रों को प्राथमिकता दी गई, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए।

कथनः 10 दृश्य सही आकार में दिए गए है, जो पाठ्को में आकर्षण और रुचि उत्पन्न करने में सहायक है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निश्कर्शः दृश्य सही आकार में दिए गए है, जो पाठ्को में आकर्षण और रुचि उत्पन्न करने में सहायक है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए।

कथनः 11 दृश्य लिखित जानकारी को उच्चस्तर तक उर्जा के रुप में संवाहक का कार्य करते हैं।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 4(44.44%) दृढ़तापूर्वक सहमत 3(33.33%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दृश्य लिखित जानकारी को उच्चस्तर तक उर्जा के रुप में संवाहक का कार्य करते हैं,

के प्रति सरकारी, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए।

कथनः 12 दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 4(44.45%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के सहमत पाए गए। और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के अनिश्चित पाए गए।

कथनः 13 विषयवस्तु की प्रकृति को उभारने के लिए सापेक्ष प्रकाश और छाया का सही उपयोग किया गया है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 4(44.45%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः विषयवस्तु की प्रकृति को उभारने के लिए सापेक्ष प्रकाश और छाया का सही उपयोग किया गया है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए।

कथनः 14 पृष्ठ का उपयोग पूर्ण रुप से किया गया है। जिससे शब्दों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पृष्ठ का उपयोग पूर्ण रुप से किया गया है। जिससे शब्दों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए।

कथनः 15 पुस्तक में नकारात्मक स्थान (स्पेस) सामग्री पर उचित ध्यान केन्द्रित और अनिवार्य करता है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.

22%) सहमत, 4(44.44%)अनिश्चित,1(11.11%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पुस्तक में नकारात्मक स्थान (स्पेस) सामग्री पर उचित ध्यान केन्द्रित और अनिवार्य करता है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। वहीं निजी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए।

कथनः 16 प्रत्येक पृष्ठ में अनुपात, विषय वाक्यों और दृश्यों को समायोजित करने का प्रयास किया गया है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः प्रत्येक पृष्ठ में अनुपात, विषय वाक्यों और दृश्यों को समायोजित करने का प्रयास किया गया है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए। वहीं निजी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए।

कथनः 17 विभिन्न रंगों के शीर्षकों का उपयोंग करके गतिविधियों के बीच की सीमाओं को दर्शाया गया।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः विभिन्न रंगों के शीर्षकों का उपयोंग करके गतिविधियों के बीच की सीमाओं को दर्शाया गया, के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर सहमत पाए गए। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर अनिश्चित पाए गए।

कथनः 18 अध्याय की इकाईयों को अलग करके और स्पष्ट करने के लिए विशेष प्रयास किए गए है जैसे पृष्ठ का मार्जिन, रंग, बड़े टाईप फॉन्ट इत्यादि।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः अध्याय की इकाईयों को अलग करके और स्पष्ट करने के लिए विशेष प्रयास किए गए है जैसे पृष्ठ का मार्जिन, रंग, बड़े टाईप फॉन्ट इत्यादि, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प में दृढ़तापूर्वक सहमतको चुना। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने सहमत को चुना। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प में दृढ़तापूर्वक सहमत को चुना।

कथनः 19 आवरण डिजाईन आकर्षक और सौन्दर्ययत्मक ढंग तरह से तैयार किया गया है। शब्द और चित्रों को विशिष्ट स्थान दिया गया है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए। निष्कर्षः आवरण डिज़ाईन आकर्षक और सौन्दर्ययत्मक ढंग तरह से तैयार किया गया है। शब्द और चित्रों को विशिष्ट स्थान दिया गया है, के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में दृढ़तापूर्वक सहमत को चुना। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने अनिश्चित को चुना।

कथनः 20 पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों के रंगों की संरचना में सामन्जस्यता है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए। निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों के रंगों की संरचना में सामन्जस्यता है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में दृढ़तापूर्वक सहमत को चुना। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने अनिश्चित को चुना।

कथनः 21 आवरण आवरण विशेषरुप से शीर्षक, और प्रकाशन से संबंधित जानकारी देने में सक्षम हैं।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए। निष्कर्षः आवरण विशेषरुप से शीर्षक, लेखक और प्रकाशन से संबंधित जानकारी देने में सक्षम हैं, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में दृढ़तापूर्वक सहमतको चुना। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने औसत को चुना।

कथनः 22 पाठ्यपुस्तक आकार और वजन में उचित है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक आकार और वजन में उचित है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में दृढ़तापूर्वक सहमत को चुना। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में सहमत को चुना। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने औसत को चुना।

कथनः 23 पाठ्यपुस्तक कागज और आकार की गुणवत्ता के कारण अधिक समय तक संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सकता है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए। निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक कागज और आकार की गुणवत्ता के कारण अधिक समय तक संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सकता है, के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में दृढ़तापूर्वक सहमतको चुना। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में सहमत को चुना।

कथनः 24 गुणवत्ता वाले मुद्रण और जिल्द के लिए उच्च स्तर के उपकरण और तकनीक का प्रयोग किया गया है जैसे डिजिटल प्रिंटिंग सिस्टम, गुणवत्ता वाली स्याही का प्रयोग आदि।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(22.22%) सहमत, 4(44.45%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः उच्च गुणवत्ता वाले मुद्रण और जिल्द के लिए उच्च स्तर के उपकरण और तकनीक का प्रयोग किया गया है जैसे डिजिटल प्रिंटिंग सिस्टम, गुणवत्ता वाली स्याही का प्रयोग आदि, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में सहमतको चुना। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में अनिश्चित को चुना।

कथनः 25 पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन, संयोजन और आवरण छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करता है।

कथन के प्रति सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 1(11.11%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 5(55.56%) सहमत, 3(33.33%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन, संयोजन और आवरण छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करता है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में सहमतको चुना। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में अनिश्चितको चुना।

तालिका में दिए गए सभी 25 कथनों के समक्ष सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 78(34.

66%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 95(42.22%) सहमत, 51(22.66%) अनिश्चित 1(0.44%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः शिक्षण और अधिगम के लिए पाठ्यपुस्तकों का बहुत महत्व है। शिक्षण और अधिगम, शिक्षकों और छात्रों द्वारा किए गए कार्य हैं, इसलिए यह जानने की आवश्यकता है कि ज्ञान का स्रोत क्या है, जो उनकी गतिविधियों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने में सहायक हो सके। हमें अपने चयन और पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन में व्यापक रूप से उपयुक्त और प्रासंगिक रूप से निर्धारित मानदंड लागू करने चाहिए। इस अध्ययन का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित पाठ्य सामग्री का विजुअलाइजेशन की जाँच करना था कि किस स्तर तक पाठक को पाठ्यपठन में सहायता करती है, क्योंकि शैक्षिक संदर्भ में उपयोग किए जाने वाले किसी भी विजुअलाइजेशन का उद्देश्य पाठ्य पठन सामग्री को आर्कषक और रोचक बनाना ही नहीं है अपितु ज्ञान (विचार, अवधारणा, तथ्य, एल्गोरिथ्म, संबंध, ...) को सीखने की सुविधा सुव्यवस्थित ढंग से प्रदान करना भी है। इसे पूरा करने के लिए शिक्षार्थी के पास ज्ञान और पढ़ाए जा रहे विषय के बीच एक संबंध होना चाहिए। शिक्षा के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि पाठ्यपठन साम्रगी या अवधारणा के लिए शिक्षार्थी ज्ञान का आधार कई रूप ले सकता है। इन विभिन्न रूपों में विजुअलाइजेशन पाठ्यपठन साम्रगी को प्रभावित करता हैं, कि कैसे सामग्री के अनुरुप दृश्य का सृजन किया जाए और उनके ज्ञान के आधार पर पूर्णांक बनाया जाएगा। कक्षा ग्यारहवीं की पाठ्यपुस्तक भारतीय कला का परिचय, भाग–1, (An Introduction to India Part-1, Textbook in Fine Arts) के विजुअलाइजेशन के मूल्यांकन में अध्यापकों से साकारात्मक और नकारात्मक मत प्राप्त हुए, जिसमें कुछ अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत और सहमत पाए गए। वहीं कुछ अध्यापक असहमत और अनिश्चित भी पाए गए, अर्थात प्राप्त आकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक सामग्री शत–प्रतिशत अध्यापकों की अपेक्षा के अनुरुप नहीं है। पुस्तक में आंशिक रुप से सुधार की आवश्यकता है। भविष्य में पाठ्यपुस्तक लिखते समय महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देते हुए समाहित किया जाना चाहिए, ताकि पाठ्यपुस्तकें अध्यापक और विद्यार्थियों के पास पहुंचे तो शतप्रतिशत गुणवत्तापूर्ण एवम् उत्तम विजुअलाइजेशन के साथ ही पहुंचें, जिनके पाठ्यपठन में रोचकता आए। अंतः पाठ्यक्रम सामग्री और सीखने के वातावरण को डिजाइन करना आवश्यक है, जो एक सामाजिक और ज्ञानात्मक संबंध बनाते हैं, और छात्रों को साक्ष्य, तर्क, प्रयोगात्मक प्रक्रिया, या संचार के साधन के रुप में दृश्य के अभ्यास में संलग्न करने और प्रथाओं को प्रतिबिंबित करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. पृ0 सं0 **xi** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित।
2. सारा कॉस्मैनेजहेदफार्ड, मसोमेह पौरराजब, मोहतरम रब्बानी (2015). *इफेक्टिव ऑफ पिक्चरस इन टेक्सटबुक्स ऑन स्टूडेंट्स क्रिएटिविटी*, मल्टी–डिसप्लीनरी एड्यु ग्लोबल क्वेस्ट (क्वार्टरली). वॉल .4(14)

3. ब्लैकी, फिओन (1991). *फिलोसोफिकल बेसेस फॉर कन्सेप्शन्स ऑफ सीनियर सेकेंडरी लेवल स्टूडेंट इवैल्यूएशन इन आर्ट एजुकेशन इन ब्रिटैन एंड नार्थ अमेरिका.* मैरीलीन जुरमुहलिन वर्किंग पेपर्स इन आर्ट एजुकेशन वॉल. 10, पृ0 सं0 **96–102**
4. खालिद महमूद (2009), **इंडीकेटर्स फॉर ए क्वालिटी टेक्स्टबुक इवैल्यूएशन प्रोसेस इन पाकिस्तान**, जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रेफ्लेक्शंस इन एजुकेशन. वॉल. 3(2), पृ0 सं0 **158–176**
5. https://www.scribd.com/document/326132671/The-Need-of-Textbook-Evaluation
6. अमेरियन, एम, और खैवार, ए (2014), *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लैंग्वेज लर्निंग एंड एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स वर्ल्ड*, (IJLLAL), वॉल्यूम 6 (1), पृ0 सं0 **523–533**, EISSN. 2289–2737 और ISSN- 2289&3245 www-ijllalw-org,
7. https://www.researchgate.net/publication/320172366_Textbook_Selection_Evaluation_and_Adaptation_Procedures
8. https://web.cs.wpi.edu/~matt/courses/cs563/talks/education/IEindex.html
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Visualization_(graphics)